दलित मुसलमानों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

Rohit Singh

&

Dr. S. M. Mishra

Sidhi (M.P.)

मुस्लिम समाज के बारे में आम धारणा है कि जात-पात पर आधारित भेदभाव और छुआछूत नहीं है। जबकि मुस्लिम समाज भी जात-पात जैसी बीमारी से ग्रसित है। जुलाहा, धुनिया और हलालखोर वगैरह कई मुस्लिम जातियाँ नीची जाति के होने के कारण खुद अपने ही समुदाय में उपेक्षा के शिकार है। इनके प्रति उच्च वर्गीय मुसलमानों के द्वारा सामाजिक व्यवहार में भेदभाव किया जाता है। उच्च जाति के मुसलमान नीची जाति के मुसलमानों के घर नहीं जाते हैं। नीची अर्थात दलित मुसलमानों के साथ उपेक्षा भरा यह व्यवहार न सिर्फ इस्लाम के मूल सिद्धान्त के खिलाफ है बल्कि किसी सभ्य समाज के प्रतिकूल भी है।

परंम्परागत कार्य से अपनी आजीविका चालने वाला दलित मुस्लिम समाज आज आर्थिक तंगी से जूझ रहा है। अध्ययन में दलित मुसलमानों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण चयनित उत्तरदाताओं द्वारा प्राप्त प्रतिउत्तर के आधार पर किया गया है।

भारत एक समाजवादी, लोकतान्त्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, यहाँ सभी धर्मो को समानता का अधिकार प्रदान किया गया है और इसी समानता के आधार पर सभी धर्म आजादी के बाद लगभग उन्नति की ओर अग्रसर हैं। परन्तु मुस्लिम समुदाय का एक बहुत बड़ा वर्ग जिसे दलित मुसलमान के नाम से जाना जाता है उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति अति पिछड़ी हुई है। ये राजनीतिक रूप से अपने वैधानिक अधिकारों को जानते ही नहीं हैं, जिससे इनकी आर्थिक प्रगति अवरूद्ध है। जबकि दलित मुस्लिम समुदाय को नागरिकता के सभी अधिकार प्राप्त हैं किन्तु आज भी यह समुदाय अपने दायित्वों की पूर्ति हेतु जातिगत बंन्धन में जकड़ा हुआ है। आजादी के कई वर्षो बाद भी यहाँ के दलित मुस्लिम समुदाय के महिला व पुरूष वर्ग परंम्परागत व्यवयसायिक कार्यो से जुड़े हैं।

इस्लाम एक समतावादी धर्म होते हुए भी भारत में उसकी स्थिति वंषानुगत है। भारत का मुस्लिम समाज एक धर्मान्तरित समाज है। अर्थात भारत में ब्रह्मण, क्षत्रिय और वैष्य जातियों से बड़ी संख्या में लोगों ने स्वार्थवष या दवाब में आकर इस्लाम अपनाया था। लेकिन इस्लाम में जाकर भी इन लोगों ने अपनी जातीय पहचान खत्म नहीं की थी। जब सम्मान के लिए स्वैच्छा से या बलपूर्वक दवाब में आकर दलित-पिछड़ी जातियों के लोग भी इस्लाम में गये, तो उच्च हिन्दुओं से धर्मान्तरित मुसलमानों ने उनके साथ ऊँच-नीच का वहीं भेदभाव जारी रखा, जो वह अपले हिन्दू फोल्ड में उनके साथ करते थे। इस प्रकार जाति भेद से मुक्त समतावादी इस्लाम भी जातीय भेदभाव को अपने विषमतावादी इस्लाम में बदल गया। इस संबंध में अन्सारी का कहना है कि भारत में मौजूदा इस्लाम वंषानुगत है। मुसलमानों में, उच्च व कुलीन वर्ग को अशरफ, दस्तकार व पिछड़ी जाति से बने मुसलमानों को अजलफ तथा निम्न जाति के मुसलमानों को अरजल इत्यादि बिरादरी के रूप में जाना जाता है, ये सभी अपने-अपने स्तर के आधार पर सामाजिक एवं आर्थिक

संस्तरण को अपनाये हुए है। सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के आधार पर अशरफ आमतौर पर अधिक लाभ की स्थिति में है, वहीं पर अजलफ बेहद वंचित की श्रेणी में है जबकि अरजल अपने निम्न आर्थिक जीवन के कारण हाशिए पर है। अतः दलित मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति इत्यादि सभी क्षेत्रों का मूल्यांकन वर्तमान समय की आवश्यकता है। उन्हें दूसरे समुदायों के समतुल्य लाने के उपाय शासन स्तर पर किये जा रहे है। वर्तमान समय में उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति जनजातियों जैसी ही है। इनके सामाजिक एवं आर्थिक संस्तरण को बढ़ाकर शासन स्तर पर लाभ दिया जाना चाहिए। जिन मुसलमानों में सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति का स्तर समान है उनका संस्तरण समाज में अतुलनीय है। लेकिन वहीं पर संम्पत्ति और संसाधनों की पहुँच कुछ मुसलमान तबकों में न होने पर उन्हें अलग-अलग सामाजिक एवं आर्थिक स्तर हासिल हुआ है।

आज भी दलित मुस्लिम समुदाय ऐसा है जो अपने आपको समय के साथ परिवर्तनशील कर उन्नति नहीं कर पाया है तथा जातिवाद के चंगुल में जकड़ा हुआ है। इसका मुख्य कारण, उसमें विद्यमान रूढ़िवादिता, अशिक्षा, जाति व्यवस्था तथा उसकी संकीर्ण मानसिकता है। यह समुदाय अपने आपको समय के साथ नहीं बदल पाया है। इस समाज में जातीयता का प्रभाव अधिक है।

निष्कर्ष

दलित मुस्लिम समाज की वर्तमान दषा स्पष्ट संकेत करती है कि यह समाज एक अत्यन्त पिछड़े हुए समाज में परिवर्तित हो चुका है। इस संदर्भ में प्रो. असगर बजाहत लिखते हैं कि दलित मुसलमानों की मूल समस्याएँ अषिक्षा, बेरोजगारी आदि तो वही है, जो बहुसंख्यक समाज की है, लेकिन इसमें भी कोई संदेह नहीं कि दलित मुस्लिम समाज हिन्दू समाज की तुलना में अधिक पिछड़ा हुआ है। मुस्लिम राजनीति आज भी गुमराह है और उसके नेता आज भी अपनी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के निदान पर ध्यान न देकर धार्मिक-सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों पर आधारित राजनीति कर रहे हैं, जिसका फायदा विभिन्न राजनीतिक दल उठाते रहे हैं और इनको तुष्टिकरण की नीति से संतुष्ट कर उनके वास्तविक विकास को रोकते रहे हैं।

दलित मुसलमानों की समग्र स्थिति पर दृष्टिपात करने के उपरांत जो दृष्य उभरता है वह बेहद चिंताजनक है जिसमें गरीबी है, अषिक्षा है, अंधविष्वास है, दकियानूसी ख्याल है। परंम्परावादी, रूढिवादी, पिछड़ा, भटका हुआ, तिरस्कृत, शंकित, अंध धर्मान्धता से ग्रस्त उच्च व कुलीन कहे जाने वाले मुस्लिमों द्वारा कसी जाने वाली फब्तियाँ-ताने, उपेक्षाओं, अपमान, संदेह और नफरत इत्यादि का षिकार होता रहा है। ये तथ्य और स्थितियाँ दलित मुसमलानों को बड़ी दुखद स्थिति में धकेलती है।

दलित मुस्लिम समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में जातीय संरचना का प्रभाव पड़ा है जिससे संम्पूर्ण दलित मुस्लिम समाज अपने ही धर्म में अलग-थलग जीवन गुजारने में लगे है। दलित मुस्लिम समाज की व्यवस्था उनके समुदाय तक सीमित रह गयी। वस्तुतः इन्हीं सब कारणों से दलित मुस्लिम समुदाय की स्थिति हिन्दू दलितों के समान है। दलित मुस्लिम समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न श्रेणी की है। इस स्थिति के लिए उन्हीं के समाज की उच्च मुस्लिम जातियाँ अर्थात अषराफ (स्वर्ण मुस्लिम) समाज ज्यादा उत्तरदायी है। मुस्लिम समुदाय के विभिन्न संस्थाओं में ऊँची जाति वर्ग के मुसलमानों का वर्चस्व है। किसी भी ऐसे संस्थान में मुस्लिम दलित जाति वर्ग के लोग कार्य पर नहीं है। इन सबके के पीछे मुस्लिम सामाजिक-संरचना का मुख्य हाथ है। दलित मुस्लिम समाज में जातिवाद को बढ़ाने में मुस्लिम नेतृत्व सहयोगी रहा है। अतः मुस्लिम समुदाय में जातिवाद के कारण उच्च जाति के मुस्लिम निम्न (दलित) जाति के व्यक्तियों के साथ भेदभाव पूर्ण रवैया अपनाते हैं जबकि सभी मुसलमान इस्लामिक सिद्धान्तों को मानते हैं।

आजादी के 65 वर्ष बाद आज भी दलित मुस्लिम समुदाय परम्परावादी, रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था में लिपटा हुआ है। मुस्लिम समाज जातीय गुटों में बंटे हुए है एक जाति के कई सामाजिक संगठन बने हुए हैं। दलित मुस्लिम समुदाय जाति व्यवस्था को अपने विकास में बाधक मानते हैं परन्तु इसे छोड़ने का साहस भी नही करते जबकि सभी दलित मुसलमान इस्लामिक सिद्धान्तों

को मानते हैं, जिसमें किसी प्रकार के जातीय संस्तरण को मान्यता नहीं दी गयी। अतः स्पष्ट होता है कि दलित मुस्लिम समुदाय में सामाजिक जागरूकता तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता लगभग नगण्य है। दलित मुस्लिम समाज ने अपने ही जाति के बीच जातिवाद को बढ़ावा दिया है। इनके संकुचित दृष्टिकोण, रूढ़िवादी सोच व अशिक्षा जातिवाद को पुष्ट कर रहा है। दुख की बात है कि दलित मुस्लिम समुदाय इन तथ्यों से सर्वथा अनभिज्ञ बना हुआ है। अतः दलित मुस्लिम समुदाय जातिवाद को बढ़ावा देकर अपना और अपने समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास को अवरूद्ध किये हुये है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहमद, अजीज, (1983), "इस्लामिक कल्चर एण्ड सोसायटी", मनोहर पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
2. अहमद, इम्तियाज, (1978) "कास्ट एण्ड सोसियल स्ट्राटिफिकेशन अमंग मुस्लिम इन इण्डिया", मनोहर बुक सर्विस, दिल्ली।
3. अहमद इम्तियाज, (1978) "कास्ट अमंग द मुस्लिमस", मनोहर पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. अहमद, इम्तियाज, (1976) "फैमली किनशिप एण्ड मैरिज अमंग मुस्लिम इन इण्डिया", मनोहर बुक सर्विस।
5. अहमद, रफिउद्दीन, (1981) "द बंगाल मुस्लिमस" आक्फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस न्यूयार्क।
6. अहमद, अजीमुद्दीन, (1990) "मुस्लिम इन इण्डिया" इन्टर इण्डिया पब्लिकेशनस नई दिल्ली।
7. अहमद, इम्तियाज, (1983) "मॉडिनाइजेशन एण्ड सोसियल चैन्ज अमंग मुस्लिम इण्डिया", मनोहर पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. आहुजा, राम, (2005) "भारतीय सामाजिक व्यवस्था", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. बेग, एम0 आर0 ए0, (1974) "द मुस्लिम डायलम्मा इन इण्डिया" विकास पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली।
10. बेनर्जी, बानी (1997), "मॉडिनाइजेशन ऑफ मुस्लिम यूथ", सरूप एण्ड संस नई दिल्ली।
11. ब्लन्ट, ई0 ए0 एच0 (1969), "कास्ट सिस्टम ऑफ नार्दन इण्डिया", ताराचन्द्र एण्ड कम्पनी दिल्ली।
12. बसु, दुर्गा दास (1978), "भारत का संविधान", प्रेक्टिस ऑफ इण्डिया नई दिल्ली।
13. बुगले, सी. (1958), "द इसन्स एण्ड द रियलटी ऑफ कास्ट सिस्टम इन कन्ट्रीब्यूशन टू इण्डियन सोसोलाजी नं.-2
14. बेली, एफ0 जी0 (1957), "ट्राइब कास्ट द इकोनोमिक पुन्टियर", मानचेस्टर यूनिवर्सिटी, मानचेस्टर।
15. बहादुर, लाल (1964), "द मुस्लिम लीग हिज हिस्ट्री", आगरा बुक स्टोर, आगरा।
16. चौ., ए. शाहिद (1998), "सूफीज्म इज नोट इस्लाम", रीजेन्सी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
17. चन्द तारा (1946), "इन इनफ्लुइन्स ऑफ इस्लाम इन इण्डियन कल्चर", दिल्ली पब्लिकेशन डिवीजन।
18. चौधरी, ए. शाहिद (1992), "कास्ट क्लीवेज प्ररोब इण्डिया", नई दिल्ली।
19. डुमाउन्ट, एल0, (1970) "होमो हैरारकीकस द कास्ट सिस्टम एण्ड इट्स इम्लिकेशन्स", ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन।
20. दूबे एवं मुखर्जी (1946), "भारतीय सामाजिक संस्थायें" सरस्वती सदन प्रकाशन।
21. इन्जिनियर, अली अशगर, (1985), "इण्डियन मुस्लिम ए स्टडी ऑफ माइनोरटीज प्रोबलमस इन इण्डिया", अजन्ता पब्लिकेशन्स दिल्ली।
22. इन्जिनियर, अली अशगर, (2004), "रिजर्वेशन फॉर मुस्लिम इन इण्डिया", दिल्ली।